आदर्श बालक

बच्चे जो भय से डरे नहीं

आदर्श बालक

बच्चे जो भय से डरे नहीं (बालक)

शिवनाथ

लेखश्री पब्लिकेशन

ISBN : 978-81-905384-1-1

लेखश्री पब्लिकेशन
पन्नालाल लेन, 21-ए, दरियागंज,
नयी दिल्ली-110002
द्वारा प्रकाशित
संस्करण : 2018
मूल्य : ₹ 30.00

जी.एस. ऑफसेट, दिल्ली-110032 द्वारा मुद्रित

वीर बालक जेरापुर-नरेश

हैदराबाद राज्य के पास जेरापुर नाम की एक छोटी-सी हिंदू रियासत थी। सन् 1857 के विद्रोह में वहाँ के राजा ने अंग्रेजों से लड़ने के लिये अरब और रोहिला-पठानों की एक सेना जुटायी, लेकिन वह राजा उस समय बालक ही था। उस समय के हैदराबाद निजाम के मन्त्री सालारजंग ने उसे धोखे से गिरफ्तार कर लिया और अंग्रेजों को सौंप दिया।

कर्नल मेटोज टेलर नाम के एक अंग्रेज अधिकारी से इस राजा का बड़ा प्रेम था। राजा उन्हें 'अप्पा' कहा करता था। कर्नल टेलर राजा से जेलखाने में मिलने गये और

बालक समझकर उन्हें फुसलाने लगे—'यदि तुम दूसरे विद्रोह करनेवालों का नाम बता दोगे तो तुम्हें क्षमा कर दिया जायगा।'

लेकिन सच्चे और बहादुर बालक अपने साथियों से विश्वासघात नहीं करते। राजा ने हँसकर कहा—'अप्पा! मैं किसी का नाम नहीं बताऊँगा। अपने प्राण बचाने के लिये मैं अपने देश के भाइयों को संकट में नहीं डालूँगा। मैं तो आप लोगों से क्षमा भी नहीं माँगना चाहता। दूसरों की दया पर मुझे कायर के समान जीना अच्छा नहीं लगता।'

कर्नल टेलर ने कहा 'तुम जानते हो कि तुम्हें प्राणदण्ड मिलेगा?' उस बालक राजा ने कहा—'हाँ, मैं जानता हूँ, लेकिन मेरी एक प्रार्थना मानो तो मुझे फाँसी पर मत चढ़ाना। मैं चोर नहीं हूँ। मुझे तोप से उड़ा देना। तुम भी देखना कि मैं तोप के मुँह के सामने
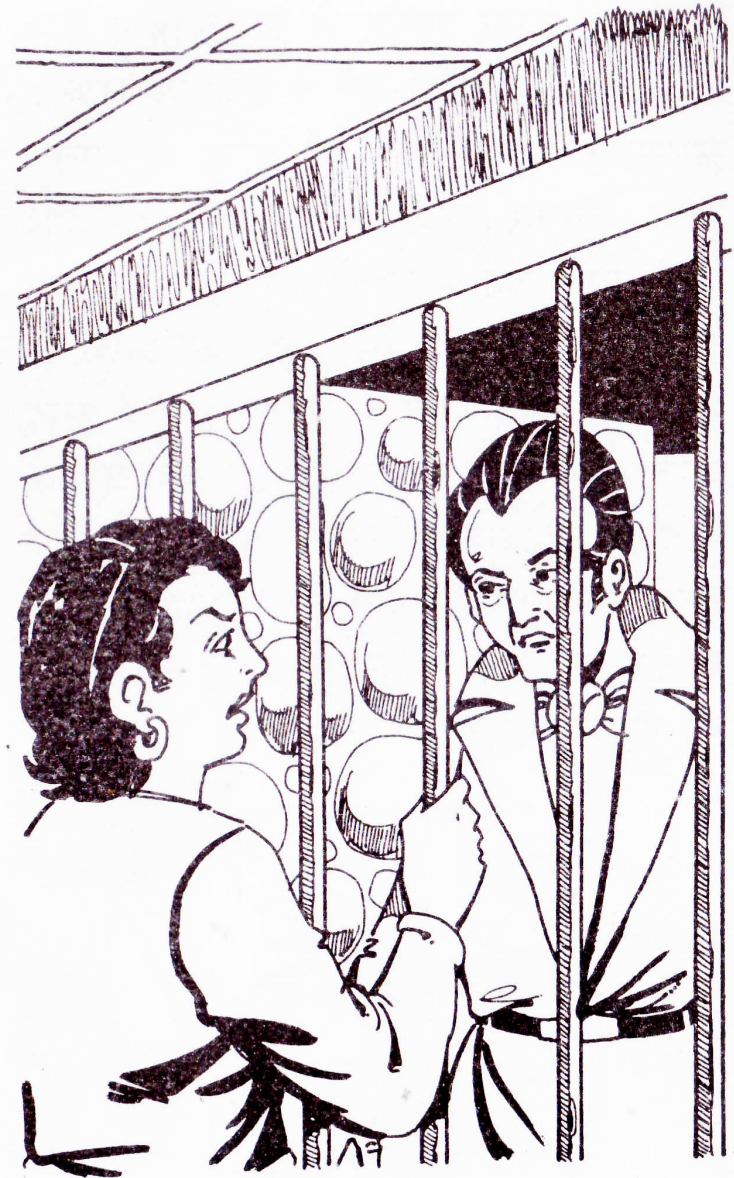
किस प्रकार शान्ति से खड़ा रहता हूँ।'

कर्नल टेलर के कहने से राजा को बालक समझकर काले-पानी की सजा दी गयी। सजा सुनकर राजा ने कहा-'जेल और काले-पानी की सजा तो मेरे यहाँ का एक कंगाल पहाड़ी भी पसंद नहीं करेगा, मैं तो राजा हूँ। काले-पानी के बदले मैं मृत्यु पसंद करता हूँ। राजा ने एक अंग्रेज पहरेदार के हाथ से झटककर पिस्तौल छीन ली और अपने ऊपर गोली दाग दी।' एक सुकुमार बालक की यह वीरता देखकर अंग्रेजों को भी उसकी प्रशंसा करनी पड़ी।

वीर बालक बादल

उस समय दिल्ली की गद्दी पर अलाउद्दीन खिलजी बादशाह होकर बैठा था। वह बहुत धूर्त तथा निष्ठुर बादशाह था। राजपुतानों में चित्तौड़ के सिंहासन पर उस समय राणा रतनसिंह (रत्नसिंह) विराजमान थे। अलाउद्दीन ने सुना कि राणा की महारानी पद्मिनी बहुत ही सुन्दर हैं। वह पद्मिनी को किसी भी प्रकार पाने के लिये बड़ी भारी सेना लेकर राजपुताने गया और चित्तौड़ से थोड़ी दूर पर उसने अपनी सेना का पड़ाव डाला। उस धूर्त ने राणा के पास संदेश भेजा–'मैं पद्मिनी का प्रतिबिम्ब शीशे में देखकर लौट जाऊँगा।' महाराणा रतनसिंह ने इतनी बात के लिये

व्यर्थ रक्तपात करना अच्छा नहीं समझा। उनके बुलाने पर अलाउद्दीन दुर्ग में आया। दर्पण में रानी पद्मिमी का प्रतिबिम्ब उसे दिखा दिया गया। लौटते समय राणा उसे दुर्ग से बाहर तक पहुँचाने आये। दुर्ग से बाहर अलाउद्दीन ने पहले से अपने सैनिक छिपा रखे थे। उन्होंने राणा पर आक्रमण करके उन्हें पकड़ लिया और बन्दी बनाकर वे अपने शिविर में ले गये।

राणा के बन्दी हो जाने से चित्तौड़ के दुर्ग में हाहाकार मच गया। बादशाह की सेना इतनी बड़ी थी कि उससे सीधे संग्राम करके विजय पाने की कोई आशा नहीं थी। अन्त में रानी पद्मिनी के माता गोरा ने एक योजना बनायी। अलाउद्दीन को संदेश भेजा गया—'रानी पद्मिमी बादशाह के पास आने को तैयार हैं, यदि उनके आ जाने पर बादशाह राणा को छोड़ दें। रानी के साथ सात सौ

दासियाँ भी आयेंगी। शाही सैनिक उन्हें रोकें नहीं।' बादशाह ने इस बात को बड़े उत्साह से स्वीकार कर लिया। सायंकाल अन्धकार होने पर दुर्ग से सात सौ पालकियाँ निकलीं। बादशाह के सैनिक विजय के उन्माद में उत्सव मना रहे थे। शाही सेना में पहुँचकर रानी ने पहले राणा से भेंट करनी चाही और यह माँग भी स्वीकार हो गयी।

आप क्या सोचते हैं कि रानी पद्मिनी पालकी में बैठकर यवन बादशाह के पास आयी थीं? पालकी में रानी बना स्त्रीवेश में छिपा अपने अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित रानी का बारह वर्ष का सुन्दर भानजा बालक बादल वहाँ आया था। दूसरी पालकियों में भी राजपूत सरदार बैठे थे और पालकी उठानेवाले कहारों के वेश में भी राजपूत योद्धा ही थे। राणा को मुक्त करके घोड़े पर बैठाकर कुछ सैनिकों के साथ दुर्ग की ओर

उन्होंने भेज दिया और स्वयं अलाउद्दीन की सेना पर शस्त्र लेकर टूट पड़े। गोरा इस सेना का सेनापतित्व कर रहे थे। बादल ने इस युद्ध में अद्‌भुत वीरता दिखलायी। लेकिन मुट्ठीभर राजपूत समुद्र के समान विशाल शाही सेना से कब तक लड़ते। गोरा रणभूमि में काम आये। दोनों हाथों से तलवार चलाकर यवन-सैनिकों को गाजर-मूली की भाँति काटता हुआ बालक बादल दुर्ग में पहुँच गया। अलाउद्दीन चाहता था कि इस युद्ध का समाचार दुर्ग में न पहुँचे। अचानक आक्रमण करके वह पद्मिनी को पकड़कर दिल्ली ले जाना चाहता था; किंतु उस बारह वर्ष के बालक ने उसकी एक भी चाल चलने नहीं दी। दुर्ग में समाचार पहुँचते ही राजपूत वीरों ने केसरिया बाना पहिना और निकल पड़े धर्म एवं मातृ-भूमि पर मस्तक चढ़ाने! बड़ी कठिनाई से अलाउद्दीन को विजय प्राप्त हुई।

अपनी अधिकांश सेना की बलि देकर जब वह चित्तौड़ के पवित्र दुर्ग में घुसा, तब वहाँ बहुत बड़ी चिता धाँय-धाँय करके जल रही थी। राजपुताने की देवियाँ पापी पुरुष के स्पर्श से बचने के लिये अग्नि में प्रवेश करके स्वर्ग पहुँच चुकी थीं। अलाउद्दीन ने अपना सिर पीट लिया। भारत की वह गौरवमयी दिव्यभूमि सतियों के तेज के साथ वीर बालक बादल की शूरता एवं बलिदान से नित्य उज्ज्वल है।

मुद्रक : बालाजी आफसैट, दिल्ली-110032